Roll No. .....

(05/24)

19212

M. A. EXAMINATION

(For Regular Batch 2022 & Onwards)

(Second Semester)

HINDI

MA/HIN/2/CC6

भक्ति एवं रीतिकालीन काव्य

Time : Three Hours *Maximum Marks : 70*

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं । निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5×2=10

(क) कबीरदास की भाषा 'पंचमेल खिचड़ी है' । इस कथन की पुष्टि कीजिए ।

(ख) 'सब कहँ चाँद मोहि होई राहू' वाक्य में कौनसा अलंकार है ?

(ग) कुब्जा के अनुसार किसका हेतु जानकर श्रीकृष्ण मथुरा आये हैं ?

(घ) कवितावली में राम नाम की महिमा का उल्लेख कीजिए ।

(ङ) देव की प्रेम-भावना ।

खण्ड 'क'

2. कबीरदास की गुरु महिमा पर प्रकाश डालिए । 15

अथवा

"जायसी ने पद्मावत में संयोग श्रृंगार की अपेक्षा वियोग श्रृंगार का विशद चित्रण किया है ।" इस कथन की पुष्टि कीजिए ।

खण्ड 'ख'

3. भ्रमरगीत परम्परा में सूरदास कृत 'भ्रमरगीत' का स्थान निर्धारित कीजिए । 15

अथवा

कवितावली की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए ।

खण्ड 'ग'

4. 'बिहारी श्रृंगार रस के सिद्ध कवि हैं ।' स्पष्ट कीजिए । 15

अथवा

कवि भूषण की वीर-भावना पर प्रकाश डालिए ।

खण्ड 'घ'

5. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×5=15

(क) राम मोहि तारि कहाँ ले जैहो ।

सो बैकुंठ कहौ धू कैसा, करि पसाव मोहि दै हौ ।

जो मेरे जीव दोई जानत हौं, मोहि मुकुटि बतावौ ।

एकमेक रमि रह्या सबनि में, तो काहे भरमावौ ।

तारण तिरण जबै लग कहिए, तब लग तत्त न जानां ।

एक राम देख्या सबहिन में, कहै कबीर मन मानां ।

अथवा

मतैं बैठि बादल औ गोरा ।
सो मत कीज परै नहिं भोरा ।।
पुरुष न करहिं नारिमति काँची ।
जस नौशाबा कीन्ह न बाँची ।।
परा हाथ इसकंदर बैरी ।
सो कित छोड़ि कै भई बँदेरी ? ।।
सुबुधि सो ससा सिंघ कहँ मारा ।
कुबुधि सिंघ कूआँ परि हारा ।।
देवहिं छरा आइ अस आँटी ।
सज्जन कंचन, दुर्जन माटी ।।
कंचन जुरै भए दस खंडा ।
फूटि न मिलै काँच कर भंडा ।।
जस तुरकन्ह राजा छर साजा ।
तस हम साजि छोड़ावहिं राजा ।।

(ख) गोकुल सबै गोपाल उपासी ।
जोग अंग साधत जे ऊधो ते सब बसत ईसपुर कासी ।

यद्यपि हरि हम तजि अनाथ करि तदपि रहति चरननि रस रासी ।
अपनी सीतलताहि न छाँड़त यद्यपि हैं ससि राहु-गरासी ।
का अपराध जोग लिखि पठवत प्रेम भजन तजि करत उदासी ।
सूरदास ऐसी को बिरहिन माँगति मुक्ति तजे गुनरासी ।।

अथवा

जग जाचिअ कोउ न, जाचिअ जौं जियँ जाचिअ जानकीजानहि रे ।
जेहि जाचत जाचकता जरि जाइ, जो जारति जोर जहानहि रे ।।
गति देखु बिचारि बिभीषन की, अरु आनु हिएँ हनुमानहि रे ।।
तुलसी ! भजु दारिद-दोष-दावानल संकट-कोटि-कृपानहि रे ।।

(ग) राधिका कान्ह को ध्यान धरैं तब कान्ह ह्वै राधिका के गुन गावै ।

त्यों अँसुवा बरसै बरसाने को पाती लिखै लिखि
राधिकै ध्यावै ।
राधे ह्वै जाइ तेही छिन देव सु प्रेम की पाती
लै छाती लगावै ।
आपु ते आपुही मैं उरझै सुरझै बिरझै समुझै
समुझावै ॥

अथवा

अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप
बाँक नहीं ।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौ झझकें कपटी जे
निसांक नहीं ।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरो
आँक नहीं ।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु
छटांक नहीं ॥